10. ईमानदारों के सम्मेलन में

- हरिशंकर परसाई

प्रस्तुत व्यंग्य रचना में एक सामाजिक असंगति की ओर संकेत किया गया है। इसमें हास्य और व्यंग्य का सुंदर सम्मिश्रण है। इस रचना के माध्यम से परसाई जी ने ईमानदार कहलानेवाले लोगों की बेईमानी का पर्दाफाश किया है।

मैंने कतई ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे ईमानदार माना जाऊँ। न जाने उन्हें कैसे यह भ्रम हो गया कि मैं ईमानदार हूँ। मुझे पत्र मिला, ''हम लोग इस शहर में एक ईमानदार सम्मेलन कर रहे हैं। आप देश के प्रसिद्ध ईमानदार हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप इस सम्मेलन का उद्घाटन करें। हम आपको आने-जाने का पहले दर्जे का किराया देंगे तथा आवास, भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था करेंगे। आपके आगमन से ईमानदारों तथा उदीयमान ईमानदारों को बड़ी प्रेरणा मिलेगी।'' मैं गया। लेकिन हलफिया कहता हूँ कि ईमानदारी के लिए नहीं गया। ईमान से मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। मैं यह हिसाब लगाकर गया कि दूसरे दर्जे में जाऊँगा और पहले का किराया लूँगा। इस तरह एक सौ पचास रुपये बचेंगे। यह बेईमानी कहलायेगी। पर उन लोगों ने मुझे राष्ट्रीय स्तर का ईमानदार माना ही क्यों ?

स्टेशन पर मेरा खूब स्वागत हुआ। लगभग दस बड़ी फूल-मालाएँ पहनायी गयीं। सोचा, आस-पास कोई माली होता तो फूल-मालाएँ भी बेच लेता।

मुझे होटल के एक बड़े कमरे में ठहराया गया। मेरे कमरे के बायें और सामने दो हॉल थे, जिनमें लगभग तीस-पैंतीस प्रतिनिधि ठहरे थे। मेरे दो ईमानदार साथी भी मेरे ही कमरे में आ गये। मैंने सोचा ताला लगाया जायेगा, तो इन्हें तकलीफ होगी। मैंने ताला नहीं लगाया। उद्‌घाटन शानदार हुआ। मैंने लगभग एक घंटे तक भाषण दिया।

लोग जा चुके थे। मैं था मुख्य अतिथि। मुझसे लोग बातें कर रहे थे। मैं चलने लगा, तो चप्पल पहनने गया। देखा, मेरी चप्पलें गायब थीं। नयी और अच्छी चप्पलें थीं। अब वहाँ एक जोड़ी फटी-पुरानी चप्पलें बची थीं। मैंने उन्हें ही पहन लिया। यह बात फैल गयी कि मेरी नयी चप्पलें कोई पहन गया।

एक ईमानदार डेलीगेट मेरे कमरे में आये। कहने लगे, ''क्या आपकी चप्पलें कोई पहन गया ?''

मैंने कहा, ''हाँ, इतने बड़े जलसे में चप्पलों की अदला-बदली हो ही जाती है।'' फिर मैंने ध्यान से देखा, उनके पाँवों में मेरी ही चप्पलें थीं। वह भी मेरी चप्पलें देख रहे थे। वे बहुत करके उनकी ही थीं।

KVS Not to be republished

पर वह बेहिचक मुझे समझाने लगे, ''देखिए, चप्पलें एक जगह नहीं उतारना चाहिए। एक चप्पल यहाँ उतारिये, तो दूसरी दस फीट दूर। तब चप्पलें चोरी नहीं होतीं। एक ही जगह जोड़ी होगी, तो कोई भी पहन लेगा। मैंने ऐसा ही किया था।''

मैं देख रहा था कि वह मेरी ही चप्पलें पहने हैं और मुझे समझा रहे हैं।

मैंने कहा, ''कोई बात नहीं। सुबह दूसरी खरीद लूँगा। आपकी चप्पलें नहीं गयीं, यह गनीमत है।''

फिर मैंने देखा कि एक बिस्तर की चादर गायब है। मैंने आयोजनकर्ताओं से कहा, तो उन्होंने जवाब दिया, ''होटलवाले ने धुलाने को भेज दी होगी। दूसरी आ जायेगी।'' पर दूसरी आयी नहीं।

दूसरे दिन गोष्ठियाँ शुरू हो गयीं। रात को गोष्ठियों से लौटा। देखा कि दो और चादरें गायब हैं। तीनों चली गयीं।

दूसरे दिन बैठक में जाने के लिए धूप का चश्मा खोजने लगा, तो नहीं मिला शाम को तो था।

मैंने एक-दो लोगों से कहा, तो बात फैल गयी।

इसी समय बगल के कमरे में हल्ला हुआ, ''अरे मेरा ब्रीफकेस कहाँ चला गया? यहीं तो रखा था।''

मैंने पूछा, ''उसमें पैसे तो नहीं थे ?''

जवाब मिला, ''पैसे तो नहीं थे। कागज़ात थे।''

मैंने कहा, ''तो मिल जायेगा।''

मैं बिना धूप का चश्मा लगाये बैठक में पहुँचा।

बैठक में पन्द्रह मिनट चाय की छुट्टी हुई। लोगों ने सहानुभूति प्रकट की। एक सज्जन आये। कहने लगे, ''बड़ी चोरियाँ हो रही हैं। देखिए, आपका धूप का चश्मा ही चला गया।''

KVT BSS Not to be republished

वह धूप का चश्मा लगाये थे। मुझे याद था, एक दिन पहले वह धूप का चश्मा नहीं लगाये थे। मैंने देखा, जो चश्मा वह लगाये थे, वह मेरा ही था।

कहने लगे, ''आपने चश्मा लगाया नहीं था ?''

मैंने कहा, ''रात को क्या चाँदनी में धूप का चश्मा लगाया जाता है ? मैंने कमरे की टेबुल पर रख दिया था।''

वह बोले, ''कोई उठा ले गया होगा।''

मैं उन्हें देख रहा था और वह मेरा चश्मा लगाये इतमीनान से बैठे थे।

तीसरे दिन रात को लौटा, तो कुछ हरारत थी थोड़ी ठण्ड भी थी। मैंने सोचा, बिस्तर से कम्बल निकाल लूँ। पर कम्बल भी गायब था।

फिर हल्ला हुआ। स्वागत समिति के मंत्री आये। कई कार्यकर्ता आये। मंत्री कार्यकर्ताओं को डाँटने लगे, ''तुम लोग क्या करते हो ? तुम्हारी ड्यूटी यहाँ है। तुम्हारे रहते चोरियाँ हो रही हैं। यह ईमानदार सम्मेलन है। बाहर यह चोरी की बात फैली, तो कितनी बदनामी होगी ?''

कार्यकर्ताओं ने कहा, ''हम क्या करें ? अगर सम्माननीय डेलीगेट यहाँ-वहाँ जायें, तो क्या हम उन्हें रोक सकते हैं ?''

KTBS Not to be republished

मंत्री ने गुस्से से कहा, ''मैं पुलिस को बुलाकर यहाँ सबकी तलाशी करवाता हूँ।''

मैंने समझाया, ''ऐसा हरगिज मत करिये। ईमानदारों के सम्मेलन में पुलिस ईमानदारों की तलाशी ले, यह बड़ी अशोभनीय बात होगी। फिर इतने बड़े सम्मेलन में थोड़ी गड़बड़ी होगी ही।''

एक कार्यकर्ता ने कहा, ''तलाशी किनकी करवायेंगे, आधे के लगभग डेलीगेट तो किराया लेकर दोपहर को ही वापस चले गये।''

रात को पहनने के कपड़े सिरहाने दबाकर सोया। नयी चप्पलें और शेविंग का डिब्बा बिस्तर के नीचे दबाया।

सुबह मुझे लौटना था। मुझे उन लोगों ने अच्छा पैसा दिया। मैंने सामान बाँधा।

मंत्री ने कहा, ''परसाई जी, गाड़ी आने में देर है। चलिये, स्वागत समिति के साथ अच्छे होटल में भोजन हो जाये। अब ताला लगा देते हैं।''

पर ताला भी गायब था। ताला तक चुरा लिया। गजब हो गया।

मैंने कहा, ''रिक्शा बुलवाइये। मैं सीधा स्टेशन जाऊँगा। यहाँ नहीं रुकूँगा।''

मंत्री हैरान थे। बोले, ''ऐसी भी क्या नाराज़गी है ?''

मैंने कहा, ''नाराज़गी कतई नहीं है। बात यह है कि चीज़ें तो सब चुरा ली गयीं। ताला तक चोरी में चला गया। अब मैं बचा हूँ। अगर रुका तो मैं ही चुरा लिया जाऊँगा।''

******

K T B S
Not to be republished

पाठ का आशय :

इस जगत् में अच्छाई-बुराई दोनों दिखाई देती हैं। हंस क्षीर न्याय की तरह इनमें हमें सिर्फ अच्छाई को अपनाकर बुराई को छोड़ देना चाहिए। बेईमानी भी एक अवगुण है। बेईमानों पर व्यंग्य करते हुए प्रस्तुत रचना द्वारा लेखक ने सचेत किया है कि हम बेईमानी से दूर रहें ।

लेखक परिचय :

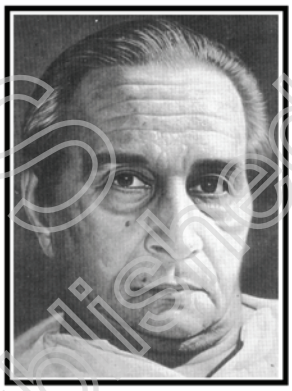

कलम को लेखक की तलवार माननेवाले श्री हरिशंकर परसाई हिन्दी साहित्य जगत् की एक बेजोड़ निधि हैं। इनका जन्म मध्य प्रदेश के जमानी गाँव में 22 अगस्त 1924 को हुआ था। इनकी कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं - हँसते हैं रोते हैं, भूत के पाँव पीछे, सदाचार का तावीज़, वैष्णव का फिसलन आदि। हिन्दी के व्यंग्य साहित्य के विकास में इनका योगदान अद्विवतीय है।

शब्दार्थ :

पर्दाफाश-अनावरण, कतई-हरगिज़, कभी भी; हलफिया-कसम से, तकलीफ-कष्ट, शानदार-वैभवयुत, डेलीगेट-Delegate, प्रतिनिधि; जलसा-समारोह, उत्सव; हिचक-संकोच, गनीमत-खुशी की बात, चश्मा-ऐनक, कागज़ात-कागज-पत्र, हल्ला-शोर, इतमीनान-भरोसा, विश्वास; हरारत-हल्का ज्वर; हरगिज़ - बिल्कुल, किसी दशा में भी; सिरहाना-तकिया।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

1. प्रस्तुत कहानी के लेखक कौन हैं ?
2. लेखक दूसरे दर्जे में क्यों सफर करना चाहते थे ?
3. लेखक की चप्पलें किसने पहनी थीं ?
4. स्वागत समिति के मंत्री किसको डाँटने लगे ?
5. लेखक पहनने के कपड़े कहाँ दबाकर सोये ?

KET Books Not to be republished

II. लिखित प्रश्न :

अ. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. सम्मेलन में लेखक के भाग लेने से किन-किन को प्रेरणा मिल सकती थी?
2. लेखक को कहाँ ठहराया गया?
3. सम्मेलन का उद्‌घाटन कैसे हुआ ?
4. ब्रीफकेस में क्या था?
5. लेखक ने धूप का चश्मा कहाँ रखा था?
6. तीसरे दिन लेखक के कमरे से क्या गायब हो गया था?

आ. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. लेखक को भेजे गये निमंत्रण पत्र में क्या लिखा गया था?
2. फूल मालाएँ मिलने पर लेखक क्या सोचने लगे?
3. लेखक ने मंत्री को क्या समझाया?
4. चप्पलों की चोरी होने पर ईमानदार डेलीगेट ने क्या सुझाव दिया?
5. लेखक ने कमरा छोड़कर जाने का निर्णय क्यों लिया?
6. मुख्य अतिथि की बेईमानी कहाँ दिखाई देती है?

इ. चार-छः वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. लेखक के धूप का चश्मा खो जाने की घटना का वर्णन कीजिए।
2. मंत्री तथा कार्यकर्ताओं के बीच में क्या वार्तालाप हुआ?
3. सम्मेलन में लेखक को क्या-क्या अनुभव हुए? संक्षेप में लिखिए।

ई. रिक्त स्थान भरिए :

1. हम लोग इस शहर में एक ..... सम्मेलन कर रहे हैं ।

K.T.B.S. Not to be republished

2. आपकी चप्पलें नहीं गयीं, यह ..... है।

3. वह मेरा चश्मा लगाये ..... से बैठे थे।

4. फिर इतने बड़े सम्मेलन में थोड़ी ..... होगी ही ।

उ. किसने कहा? किससे कहा?

1. क्या आपकी चप्पलें कोई पहन गया?

2. होटेलवाले ने धुलाने को भेज दी होगी। दूसरी आ जायेगी।

3. मैं पुलिस को बुलाकर यहाँ सबकी तलाशी करवाता हूँ।

4. चलिये, स्वागत समिति के साथ अच्छे होटल में भोजन हो जाये।

5. अब मैं बचा हूँ । अगर रुका तो मैं ही चुरा लिया जाऊँगा ।

ऊ. विलोम शब्द लिखिए :

1. आगमन ×

2. रात ×

3. जवाब ×

4. बेचना ×

5. सज्जन ×

ऋ. बहुवचन रूप लिखिए :

1. कपड़ा

2. चादर

3. बात

4. डिब्बा

5. चीज़

K T B S Not to be republished

ए. प्रेरणार्थक क्रिया रूप लिखिए :

1. ठहरना ....
2. धोना ....
3. देखना ....
4. लौटना ....
5. उतरना ....
6. पहनना ....

ऐ. संधि-विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए :

1. स्वागत
2. सहानुभूति
3. सज्जन
4. परोपकार
5. निश्चिंत
6. सदैव

ओ. कन्नड या अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :

1. हम आपको आने-जाने का पहले दर्जे का किराया देंगे।
2. स्टेशन पर मेरा खूब स्वागत हुआ ।
3. देखिए, चप्पलें एक जगह नहीं उतारना चाहिए।
4. अब मैं बचा हूँ। अगर रुका तो मैं ही चुरा लिया जाऊँगा ।

पाठ से आगे -

क. विद्यार्थियों की समस्याओं पर अपनी पाठशाला में एक विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन कीजिए ।

K T B S Not to be republished

ख. किसी सम्मेलन में भाग लेकर वहाँ के अनुभवों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

ग. ईमान गुण के सामने सही चिह्न (√) और बेईमान गुण के सामने गलत चिह्न (×) लगाइए :

1. दूसरे लोगों की वस्तुओं को उन्हें पहुँचाना ।
2. चोरी करना ।
3. रास्ते में मिली वस्तुओं को पुलिस स्टेशन पहुँचाना ।
4. कामचोरी करना ।
5. बगल में छुरी मुँह में राम-राम करना।
6. झूठ बोलना ।
7. नेक मार्ग पर चलना ।
8. जानबूझकर गलती करना ।
9. बहाना बनाना ।
10. सच बोलना ।
11. समय पर काम पूरा करना ।
12. धोखा देना ।
13. जालसाजी करना ।
14. चोर बाजारी और मिलावट करना ।
15. निष्ठा से कार्य करना ।
16. भ्रष्टाचार में शामिल होना ।
17. सेवाभाव से दूसरों की सहायता करना ।
18. देश के प्रति सच्चा अभिमान रखना ।
19. सच्चे भाव से बड़ों का आदर करना ।
20. अपने सहपाठियों के साथ भाईचारे से व्यवहार करना ।

K T B S Not to be republished

घ. चित्र देखकर कहानी रचिए, और उसके लिए एक उचित शीर्षक दीजिए :

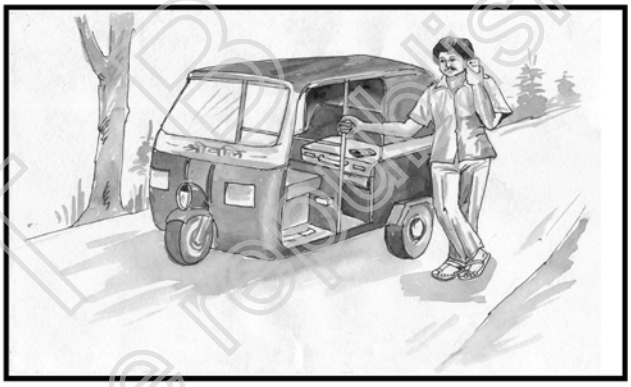

******